विशेष शिक्षा में अध्यनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं के शैक्षिक समायोजन में वातावरणीय कारकों का विश्लेषण

***रीता एवं **डॉ0 सरोज कुमार जायसवाल**

*शोधार्थी, शिक्षक–शिक्षा विभाग प्रो0 एच0एन0 मिश्रा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कानपुर

**असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग प्रो0 एच0एन0 मिश्रा कॉलेजऑफ एजुकेशन, कानपुर

सारांश

शिक्षा मनुष्य का मूल आधार है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास केवल शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिर्वतन किया जाता है एवं सभ्यता संपन्न एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। समायोजन की प्रक्रिया शिक्षा के द्वारा ही प्रारम्भ होती है। वह सामाजिक, शैक्षिक, वित्तीय, गृह तथा संवेगात्मक आदि क्षेत्रों में समायोजन करने का प्रयास करता है। इस लेख का उद्देश्य विशेष शिक्षा में अध्यनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं के शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना है। शैक्षिक समायोजन का सीधा संबंध प्रशिक्षणार्थी के उपलब्धि एवं स्वस्थ जीवन शैली से संबंधित है, क्योंकि यह प्रशिक्षु भविष्य में ऐसे बच्चों को शिक्षित करने वाले हैं, जिन्हें बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले प्रमुख वातावरणीय कारकों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है। विभिन्न कारकों के विश्लेषण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है, और वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों आती रहती हैं और वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजित करने का प्रयास करता है। अतः प्रशिक्षणार्थी को अनुकूल वातावरण प्रदान कर उसके शैक्षणिक गतिविधियों में उत्तरोत्तर विकास किया जा सकता है।

संकेत शब्द–*विशेष शिक्षा ,बी० एड० प्रशिक्षु, शैक्षिक समायोजन,वातावरणीय कारक ।*

विशेष शिक्षा :–

प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और इसलिए ''विशेष शिक्षा" को किसी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को संशोधित करने और बढ़ावा देने में सक्षम माना जाता है। यह वह शिक्षा है जिसने लाखों मनुष्यों के सपनों को जीवन की बेहतर और उच्च गुणवत्ता के लिए वास्तविकता में बदल दिया है। कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के आधार पर औपचारिक और अनौपचारिक शैक्षिक संरचनाओं की तुलना में अधिक प्रासंगिक या उपयुक्त निर्देश की आवश्यकता होती है ऐसे बच्चों की मदद करने और उन्हें संतुष्ट करने के लिए जो सीखने की आवश्यकताएं बनाई गई हैं, उसे विशेष शिक्षा कहते हैं। विशेष शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों की क्षमताओं को चित्रित करना और उन्हें मजबूत करना है। अन्य संबंधित सेवाएं जैसे–विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, विशेष परिवहन, चिकित्सा उपचार और परामर्श, विशेष शिक्षण सामग्री और विशेष सुविधाएं जो विशेष शिक्षा के साथ–साथ चलती हैं। विशेष शिक्षा अंतर और अंतर–व्यक्तिगत मतभेदों की पहचान करने में मदद करती है। सामान्य शिक्षा के सिद्धांत विशेष शिक्षा के क्षेत्र पर समान रूप से लागू होता है लेकिन स्कूल में अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने के लिए कुछ कौशलों में महारत हासिल करने में उनकी मदद करने के लिए और अधिक अवसरों की आवश्यकता है। विशेष शिक्षा को 'विशेष बच्चों' की असामान्य जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए 'निर्देश'

के रूप में परिभाषित किया गया है। इसके लिए विशेष सामग्री, शिक्षण और प्रशिक्षण तकनीकों या उपकरण और सुविधाओं की आवश्यकता होती है। विशेष शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों की विशेष क्षमताओं को बाहर निकालना और उन्हें मजबूत करना है जिसमें मनोवैज्ञानिक और चिकित्सा मूल्यांकन, शारीरिक और व्यावसायिक चिकित्सा, चिकित्सा उपचार और मार्गदर्शन और परामर्श साथ–साथ चलते हैं। बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चों को कुशल प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है; दृष्टिबाधित बच्चों को बड़े प्रिंट या ब्रेल में पठन सामग्री की आवश्यकता होती है। श्रवण बाधित बच्चों को श्रवण यंत्र, श्रवण प्रशिक्षण आदि की आवश्यकता होती है और आर्थोपेडिक रूप से विकलांगों को व्हील चेयर आदि की आवश्यकता हो सकती है इसलिए शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए, एक शिक्षक को विशेष बच्चों की विभिन्न श्रेणियों की जरूरतों के अनुसार विविध भूमिकाएँ निभानी होती हैं। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे (एनसीईआरटी, 2000) ने विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों के लिए समावेशी स्कूलों की सिफारिश की है, जो सामग्री प्रस्तुति और लेनदेन में उपयुक्त संशोधन करते हैं, विशेष शिक्षक तैयार करते हैं और अनुकूल शिक्षण मूल्यांकन प्रक्रिया विकसित करते हैं। समावेशी स्कूल सभी बच्चों में विविधता को महत्व देते हैं चाहे वे विकलांग हों या गैर विकलांग। समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करती है, जिसमें उन लोगों पर विशेष ध्यान दिया जाता है जो अलग–थलग और बहिष्कृत होने के अधीन हैं। समावेशी शिक्षा के पीछे का दर्शन सभी बच्चों के लिए भाग लेने, सीखने और समान व्यवहार करने के अवसर को बढ़ावा देना है, चाहे उनकी मानसिक या शारीरिक क्षमता कुछ भी हो। पूरे देश में स्कूलों में समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता अभी भी एक प्रारंभिक अवस्था में है और शैक्षणिक संस्थान एक ही कक्षा में सामान्य और विशेष दोनों बच्चों का अध्ययन करने के बारे में कुछ संशय में हैं। समावेशी शिक्षा और कुछ नहीं बल्कि 'विकलांग' बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा के भीतर एक प्रणाली के बजाय सामान्य शिक्षा प्रणाली के एक अभिन्न अंग के रूप में कार्यक्रम बनाना। निष्कर्ष रूप में, समावेशी शिक्षा प्रदान करने में कई बाधाएँ हैं–सभी प्रकार के छात्रों को ध्यान में रखते हुए विशेष संसाधन और पाठ्यक्रम का पुनर्गठन, ऐसे शिक्षकों की भर्ती करना जिनके पास कक्षा के भीतर विभिन्न माँगों को पूरा करने के लिए कौशल और दक्षता हो, परिवार, सहकर्मी समूहों और समाज का समर्थन बहुत महत्वपूर्ण है। अंत में, समावेशी शिक्षा की पूर्ति और सफलता के लिए शिक्षकों को वित्तीय सहायता और नीतियों को लागू करने के लिए सरकार का समर्थन एक बहुत ही आवश्यक रणनीति है।

भारत में विकलांगता की स्थिति :

भारत में विकलांगता पर सांख्यिकी का स्वरूप व्यापक रूप से भिन्न है तथा सांख्यिकी की सटीकता हमेशा संदिग्ध होती है। हालाँकि, उपलब्ध अधिकांश सांख्यिकी शिक्षा प्रणाली में अंतराल, विकलांग बच्चों के हाशिए पर होने तथा भारत सरकार द्वारा 'सभी के लिए शिक्षा' के अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अपने प्रयासों को बढ़ाने की आवश्यकता की ओर इशारा करती है। राष्ट्रीय जनगणना बताती है कि वर्ष 2002 में स्कूलों में विकलांग बच्चों में से 94.8 प्रतिशत बच्चे मुख्यधारा के स्कूल में जाते हैं तथा केवल 5.2 प्रतिशत विकलांग बच्चे विशेष स्कूल में जाते हैं।

सबसे प्रमुख अंतर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच का है। विकलांग लोगों में से 75 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं तथा प्रदान की जाने वाली अधिकांश सेवाएँ शहरी क्षेत्रों में हैं। इस प्रकार, सेवाओं में विसंगति है जो सीधे शैक्षिक उपलब्धि तथा स्कूल में नामांकन में परिलक्षित होती है। विकलांग व्यक्ति अधिनियम 1995 में प्रावधान है कि विकलांग बच्चों को 18 वर्ष की आयु तक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त हो, किसी

भी बच्चे को मुख्यधारा की शिक्षा में प्रवेश से वंचित न किया जाए, सरकारी निधि प्राप्त करने वाले संस्थानों में ऐसे बच्चों के लिए 3 प्रतिशत आरक्षण हो, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित बुनियादी ढाँचा और विशेष शिक्षक और शिक्षण पद्धतियाँ हों तथा 2020 तक सभी स्कूलों को विकलांगों के अनुकूल बनाया जाए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अब शिक्षा के अधिकार विधेयक में सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के दायरे में शामिल किया गया है, जिसका अर्थ है कि विकलांग बच्चे अब 25 प्रतिशत श्रेणी में आएँगे, जिसमें निजी स्कूलों को प्रवेश देना होगा। लोकसभा में पारित आरटीई 2009 में संशोधन में ऐसे बच्चे की परिभाषा शामिल है।

समायोजन की अवधारणा :

शिक्षा नागरिकों को जीवन स्थितियों में समायोजन के लिए प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है। शिक्षकों की मुख्य चिंता छात्रों में घर, स्कूल और समाज में समायोजन की क्षमता विकसित करना है। समायोजन जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के अंत तक जारी रहती है। समायोजन की अवधारणा मानव जाति के रूप में बहुत पुरानी है। यह मनोवैज्ञानिक और जैविक अवधारणा दोनों है। अनुकूलन शब्द का प्रयोग जीवविज्ञानियों द्वारा किया गया था। उन्होंने अनुकूलनशीलता शब्द का प्रयोग पर्यावरण की भौतिक मांगों के लिए किया है, लेकिन मनोवैज्ञानिक समाज में बदलती परिस्थितियों, सामाजिक, आर्थिक या अंतर–व्यक्तिगत संबंधों के लिए समायोजन शब्द का प्रयोग करते हैं। समायोजन का अर्थ है व्यक्ति पर लगाए गए सामाजिक वातावरण की मांगों और दबावों के प्रति प्रतिक्रिया। मांगें बाहरी या आंतरिक हो सकती हैं, जिनके प्रति व्यक्ति को प्रतिक्रिया करनी होती है। इस प्रकार समायोजन की अवधारणा सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रकृति की है। एक व्यक्ति की आमतौर पर दो तरह की मांगें होती हैं–बाहरी (सामाजिक) और आंतरिक (जैविक और मनोवैज्ञानिक) मांगें। कभी–कभी ये मांगें एक–दूसरे के साथ टकराव में आ जाती हैं और व्यक्ति के लिए समायोजन को एक जटिल प्रक्रिया बना देती हैं। किसी व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताओं या मांगों के बीच टकराव समायोजन के लिये अनेक समस्याएं उत्पन्न करती हैं एवं निराशा का कारण बनती है जो असामान्य व्यवहार को जन्म देती हैं। शिक्षा के लिए स्कूलों में अच्छी तरह से समायोजित विद्यार्थियों की आवश्यकता होती है। 'समायोजन' शब्द के दो अर्थ हैं–एक में यह एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने और अपने पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने के लिए अपने व्यवहार को बदलता है उसके प्रयास की दिशा उसके अपने व्यवहार और दृष्टिकोण को संशोधित करने या पर्यावरण को बदलने या दोनों की ओर हो सकती है। अन्य लोग इस समायोजन प्रक्रिया में या तो पर्यावरण को बदलने में मदद करके या अपने पर्यावरण पर व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदलने में मदद करके योगदान दे सकते हैं।

मिशेल जी. डंकन समायोजन शब्द को इस प्रकार परिभाषित करते हैं–''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने पर्यावरण (भौतिक और सामाजिक) के साथ सामंजस्यपूर्ण या स्वस्थ संबंध में प्रवेश करता है।''

एल.एस. शेफर–''समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है।''

अध्यापक शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक आयोजन है जिसकी सहायता से राष्ट्रीय संदर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता एवं कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जाता है। अध्यापक शिक्षा के माध्यम से भावी शिक्षकों में प्रभावपूर्ण शिक्षण हेतु आवश्यक ज्ञान, अभिवृत्ति, कौशल और व्यवहार का विकास किया जाता है। समाज, शिक्षक को शिक्षण के अतिरिक्त समाजीकरण का

दायित्व भी प्रदान करता है। विद्यार्थियों हेतु पाठ्य सहगामी एवं सामुदायिक कार्यों के क्षेत्र में भी ज्ञान व प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि विद्यार्थी, अपने सामाजिक और सामुदायिक दायित्व एवं कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझ सके। एक समाजवादी एवं धर्मनिरपेक्ष समाज के लिए पर्यावरण शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा जैसे विषयों में प्रशिक्षित तथा लोकतान्त्रिक मूल्यों से युक्त शिक्षक के निर्माण हेतु अध्यापक शिक्षा एक सक्षम उपकरण है। वर्तमान में एक ऐसे शिक्षक की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों का मनोविज्ञान अर्थात् उनकी रुचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता के संदर्भ में संवेदनशील हो नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में एक विशेष शिक्षक नियुक्त किए जाने की सिफारिश की गई है जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के रुचियों क्षमताओं एवं आकांक्षा के अनुसार कार्य कर सके। सामान्य बी. एड. प्रशिक्षुओं की तुलना में विशेष शिक्षा में अध्यनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं का उत्तरदायित्व एवं चुनौती ज्यादा बढ़ जाती है इसलिए प्रशिक्षुओं के लिये 'विशेष प्रशिक्षण' का भी प्रावधान किया गया है अतः इसकी व्यापकता को देखते इनके शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है ।

वातावरणीय प्रभाव :

वातावरण एक ऐसा शब्द है जो किसी भी व्यक्ति को पूर्णता प्रदान करने में अहम भूमिका निभाता है। कोई भी व्यक्ति चाहे कितना भी सुविधा संपन्न परिवार में पैदा हुआ हो या इसके विपरित सुविधा विहीन परिवार में पैदा हुआ हो इन दोनों परिवारों के बच्चों के संपूर्ण विकास एवं मानवीय गुणों को धारण एवं पूर्णता प्राप्त करने में वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। इन दोनों परिवारों के बच्चों पर वातावरण अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है इसमें और अधिक प्रमाणिकता प्रदान करने में जे. बी. वाटसन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका यह कहना है कि व्यक्ति अनुवांशिक कारकों से नहीं प्रभावित होता बल्कि वातावरणीय कारकों से प्रभावित होता है। इनका एक उदाहरण इससे संबंधित प्रचलित है जिसमें उन्होंने कहा कि हमें एक दर्जन सामान्य बच्चे दीजिए हम वातावरण की मदद से उसे जैसा चाहेंगे वैसा बना देंगे क्योंकि वातावरण में ऐसी शक्ति है कि वह व्यक्ति को सकारात्मक रूप से विद्वान बना सकता है और नकारात्मक प्रभाव डालकर समाज विरोधी कार्यों में भी सम्मिलित हो सकता है।

1. पारिवारिक वातावरण
2. सामाजिक वातावरण
3. संस्थागत वातावरण
4. राजनीतिक वातावरण

1. पारिवारिक वातावरण

पारिवारिक वातावरण ऐसा हो जिसमें सभी सदस्य खुश, संतुष्ट और सामंजस्यपूर्ण हों, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान किया जाता हो और उसे उसकी आयु के अनुसार अधिकार, विशेषाधिकार और जिम्मेदारियाँ दी जाती हों, और जिसमें माता–पिता में से किसी एक या दोनों का या बड़े बच्चों का छोटे बच्चों पर हुक्म चलाने का अधिकार न हो (हर्लोक, 1972)। जीवन में समायोजन खुशी की कुंजी है। किसी का भी वातावरण और पारिवारिक परिस्थितियाँ सहज नहीं होतीं, हर किसी को जब तक वह जीवित रहता है, संघर्ष करना पड़ता है। समाज और पारिवारिक परिस्थितियों में आपसी लेन–देन एक अच्छी तरह से समायोजित खुशहाल जीवन के लिए आवश्यक है। अतः पारिवारिक वातावरण एक ऐसी जगह है जहां कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी किसी भी प्रकार के वातावरण में समायोजन करने की क्षमता विकसित करता है

वास्तव में अगर माता–पिता शिक्षित हैं तो उनके बच्चों में किसी भी वातावरण में समायोजन करने की क्षमता देखी जाती है और इन बच्चों में उच्चकोटि की शैक्षिक उपलब्धि भी देखने को मिलती है। प्रत्येक अभिभावक को यह समझना चाहिए कि हमारा बच्चा देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे तो ऐसे अभिभावक अपने बच्चों को घर पर ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए कि वह कहीं भी किसी भी वातावरण में आसानी से अपने आप को समायोजित कर उच्चकोटि की उपलब्धि को हासिल करे। इसका तात्पर्य यह है कि यदि परिवार का वातावरण अच्छा है और परिवार के सदस्यों के बीच प्रेरणा और सामंजस्य पाया जाता है, तो शैक्षिक समायोजन क्षमता बढ़ती है, परिणामस्वरूप खुश और स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण होगा।

2. सामाजिक वातावरण

सामाजिक वातावरण से तात्पर्य उस तात्कालिक सांस्कृतिक परिवेश से है जिसमें लोग रहते हैं, जिसमें यह शामिल होता है कि लोग अपने–अपने समाज के संदर्भ में एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं और एक–दूसरे को कैसे देखते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और यह समाज में ही रहना पसंद करता है क्योंकि समाज के हर व्यक्ति की आवश्यकता एक दूसरे पर निर्भर रहती है जिससे कि एक दूसरे के सपोर्ट से यह पूरी हो जाती है और मानवीय जीवन की गतिविधियां सुचारू रूप से चलती हैं प्रशिक्षणार्थी भी इन्हीं समाज के अन्दर से निकलकर आता है और वह कहीं न कहीं सहयोगात्मक समाज की आवश्यकता को महसूस करता है। प्रशिक्षण स्थल एवं उसके आसपास के वातावरण के लोग उसकी हर मुश्किल से मुश्किल परिस्थिति में सहयोग करते हैं और सुझाव देते हैं जिससे कि उसका मनोबल काफी ऊंचा रहता है जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक रुमायोजन में और वृद्धि देखी जाती है सामाजिक सहयोग एवं सहभागिता को सिद्ध करने के लिए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में इसका उल्लेख किया है जैसे–यूरी ब्रान फ्रेन ब्रेनर का परिस्थितिपरक का सिद्धांत एवं वाइगोत्सकी के जॉन प्रॉक्सिमल डेवलपमेंट (ZPD) इसमें वाइगोत्सकी ने यह समझाने की कोशिश कि है कि जो समाज जितना तकनीकी युक्त रहेगा पढ़ा–लिखा रहेगा वहां बच्चे का उतना ही अधिक उसका विकास होगा और उसको सपोर्ट मिलेगा। वहीं दूसरी ओर जो निम्न समाज अशिक्षित समाज में पल रहे बच्चे को सामाजिक सहयोग उस तरीके से नहीं मिल पाता जिससे कि उसका सर्वांगीण विकास तकनीकी युक्त समाज की तुलना में काफी प्रभावित होता है। प्राचार्य का महाविद्यालय में मुख्य स्थान होता है। प्राचार्य को अपने महाविद्यालय में ऐसे कार्यक्रम कराने चाहिये, जिससे विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन, मूल्यों का विकास हो सके। जिससे विद्यार्थी अपने भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का आसानी से सामना कर सकें। अध्यापकों को सामाजिक समायोजन के गुणों का विकास करने में विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए।

3. संस्थागत वातावरण

संस्था समायोजन एक छात्र की भूमिका और संस्था के वातावरण के विभिन्न पहलुओं के लिए अनुकूल होने की प्रक्रिया है। छात्रों को संस्था में प्रत्येक वर्ष साथियों, शिक्षकों, कक्षाओं, और कक्षा के नियमों, प्रक्रियाओं आदि में बदलाव का सामना करना पड़ता है जो उनके लिये एक चुनौती होती है। इन चुनौतियों का असर उसके प्रदर्शन एवं शैक्षिक समायोजन पर भी पड़ता है। विद्यालयी समायोजन बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक स्तंभ की तरह है जिस पर बच्चे का पूरा जीवन टिका होता है। यह न केवल एक बच्चे की प्रगति उपलब्धि समायोजन से संबंधित है, बल्कि संस्था के प्रति उनके दृ ष्टिकोण, चिंताओं, अकेलेपन, सामाजिक समर्थन और शैक्षणिक प्रेरणा से भी संबंधित हैं। पारस्परिक संबंध बच्चों की शैक्षणिक प्रेरणा को प्रभावित करते हैं। यदि विद्यार्थियों का समायोजन वातावरण के साथ अच्छा

होता है तो इसका असर उसके प्रदर्शन पर पड़ता है। संस्था में सफल होने के लिए बच्चों को सामाजिक और शैक्षणिक दक्षताओं की एक श्रृंखला का प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है। समायोजन में समस्या खराब मानसिक स्वास्थ्य और स्कूल छोड़ने का कारण बन सकती है। विद्यार्थी के लिए शिक्षा उपयोगी तभी होगी जब वह अपने आसपास के साथ समायोजित हो पाए। एक ऐसा विद्यार्थी जो समायोजित है वह समस्याओं का सामना कर पाता है। उसमें यह क्षमता होती है कि वह तर्कसंगत ढंग से अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए ईमानदारी के साथ कार्य कर सके और आशावादी दृष्टिकोण रख सके। इसका तात्पर्य यह है कि जब कोई प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण हेतु किसी संस्था में प्रवेश करता है तो संस्थागत वातावरण उसे अधिक प्रभावित करता है यदि वहां का वातावरण उसके अनुकूल रहता है तो आसानी से समायोजन कर लेता है अन्यथा उसे अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। संस्थागत वातावरण में भी अनेक ऐसे तत्व सम्मिलित हैं जो प्रशिक्षणार्थी को प्रभावित करते हैं जैसे आधारभूत संरचना–इसके अंतर्गत उस संस्था का भवन एवं उसमें बने कमरे, फर्नीचर, पेयजल व्यवस्था, शौचालय, इलेक्ट्रिक व्यवस्था, शिक्षण सहायक सामग्री कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, संसाधन कक्ष, पाठ्यक्रम से संबंधित विषय विशेषज्ञों, कुशल प्रशासनिक व्यवस्था, इत्यादि यदि प्रशिक्षणार्थी के अनुकूल है तो वह आसानी से समायोजित हो जाएगा और अपने प्रशिक्षण की कुशलता को प्राप्त कर लेगा अगर यह सारी व्यवस्थाएं उसके अनुकूल नहीं रहती हैं तो वह चिंतित और कुण्ठित रहता है जिससे कि उसकी उपलब्धि क्षमता में काफी गिरावट देखी जाती है।

4. राजनीतिक वातावरण

शैक्षिक गतिविधियों में राजनीति प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। प्रदेश एवं राष्ट्र की राजनीति जिस प्रकार की विचारधारा से ओत–प्रोत होती है वह कहीं ना कहीं शैक्षिक गतिविधियों के अंदर भी देखी जाती है क्योंकि पाठ्यक्रम में सरकारें अपनी महत्वाकांक्षाओं के अनुसार उसमें परिवर्तित करती है जिसका प्रभाव विद्यार्थी एवं प्रशिक्षणार्थियों पर देखने को मिलता है यदि प्रशिक्षणार्थी के विचारधाराओं के आधार पर उसे पाठ्यक्रम मिलता है तो वह अत्यधिक रुचि पूर्वक उसे अध्ययन करता है और अपने उपलब्धि को बढ़ाता है यदि कहीं उसकी विचारधाराओं से अलग उसे पाठ्यक्रम पढ़ने को मिलता है या राजनीतिक हस्तक्षेप झेलने को मिलता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि में गिरावट देखने को मिलती है।

निष्कर्ष :

विभिन्न वातावरणीय कारकों के विश्लेषण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है, और वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से पूर्ण होता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूलन एवं प्रतिकूल परिस्थितियों आती रहती है और वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजित करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों से अपने को समायोजित कर लेता है, वह प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है वह असन्तोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है एवं अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिससे विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षणार्थी के अनुकूल वातावरण प्रदान कर उसके शैक्षणिक गतिविधियों में उत्तरोत्तर विकास किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :–

Adaval, S.B. (1963). *Teacher Education in National Council of Education Research*, Third Indian year book, NCERT, New Delhi.

Hegarthy, S., &Alur, M. (2002). *Education of children with special needs: From segregation to inclusion*. Corwin press, Sage Pub.

Karant, P., &Rozario, J. (2003). *Learning disabilities in India.* Sage Pub.

Manglasheela, (1992). *Teacher education trends and strategies.*Radha Publications, New Delhi.

Mangal, S. K. (2002). *Advanced educational psychology.* PHI Learning Pvt. Ltd.

Mangal, S. K. (2007). *Essentials of educational psychology.* PHI Learning Pvt. Ltd.

Mangal, S. K. (2007). *Educating exceptional children: An introduction to special education.* PHI Learning Pvt. Ltd.

Ruhela, S.P. (1970). Sociology of the teaching profession in India National Councial of Education Research and Training. NCERT, New Delhi.

Sharma, R. N., &Sharma, R. K. (2006). *Advanced educational psychology.*Atlantic Publishers Dist.